# सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज
## दिनांक 09 सितम्बर 2015, शनिवार
## (दुर्गापुर,)

! राधा–स्वामी.!

आप लोग यहाँ बैठे हैं, मानवदयाल महाराज का जन्मदिन मनाने के लिए। हम जन्मदिन तो जरूर मनायेंगे लेकिन क्या संतो का कभी जन्म–मरण होता है, संत हमेशा रहते हैं, लेकिन रूप बदलते रहते हैं। जब मानवदयाल जी हमेशा हैं तो फिर उनका जन्मदिन मनाने का क्या फायदा। एक बार मेरे साथ ऐसा ही हुआ । मेरे गुरू थे स्वामी जी और वो सै0–10 में हमारे ही घर में रहते थे और हम उनका हर बार जन्मदिन मनाते थे। एक दिन उन्होने चोला छोड दिया, सब लोग कहने लगे कि हम महाराज जी का प्रकाश दिवस मनायेंगे। मैंने उनसे पूछा क्या महाराज जी अब हमारे साथ नही हैं। तो सब लोग कहने लगे हाँ हैं, हमारे साथ हैं। तो मैने कहा– जब महाराज जी हैं और हमेशा हमारे साथ हैं तो हम क्यों उनका प्रकाश दिवस मनायें और मैंने उस दिन से उनका प्रकाश दिवस मनाना बंद कर दिया।

आज हम सब यहाँ मानवदयाल जी महाराज को याद कर रहें हैं। मैं भी उनको याद कर रहा हूँ। मुझे उनकी सेवा का मौका ज्यादा नही मिला, सिर्फ 2 साल ही मैंने उनकी सेवा की। लेकिन कौन से 2 साल? ये वो 2 साल थे जब उनके बेटों ने ही उनका साथ छोड दिया था। मुझे याद है मैं नया–2 आया था, वहाँ कोठी पर उनका बेटा था दर्शी, उसने दीवार पर एक चार्ट चिपका रखा था। शुबह महाराज जी को नाश्ते में 2 विस्कुट, फिर 2 घंण्टे बाद 3 बिस्कुट और फिर दोपहर को सेब का एक टुकडा, इस तरह उस चार्ट मैं मैन्यू लिखा था। एक दिन क्या हुआ? मैं शुबह–2 कोठी पर गया, तो दर्शी ने सारी चाबियाँ अलमारी की और तिजोरी की मेरे सामनें लाकर रख दी और मुझसे कहा– आज से मानवदयाल जी की जिम्मेवारी अब आपकी है और इतना कहकर चला गया और एक बार भी पीछे मुडकर नही देखा। मैं हैरान होकर देख रहा हूँ, ये सारी चाबियाँ मुझे दे दी हैं और महाराज जी को मेरे हवाले कर दिया है, मेरी समझ में कुछ नही आ रहा था। उस समय शब्दानंद जी महाराज बलिया में थे। मैंने उनको एक चिटठी् लिखी, मैने लिखा देखो दर्शी ने मेरे साथ क्या किया? वो कोठी की सारी चाबियाँ और महाराज जी को मेरे पास छोडकर चला गया, तो उधर से शब्दानंद महाराज का जबाब आया– जो संसार के Custodian हैं, उनके Custodian आप हैं। हम और मंगलदेव जी कोठी पर गए और जो वहाँ चार्ट लगा था पहले उसको फाडकर फेंक दिया। वहाँ महाराज जी का एक प्रेमी आया और वो गुलाबजामुन का डिब्बा लेकर आया, तो हमने डिब्बा खोला और उसमें से महाराज जी को गुलाब जामुन खिलाए। एक बात मैं आपको बताना चाहूँगा, जो प्रसाद महाराज जी ने मुझको दिया वो प्रसाद किसी को नही दिया और उस प्रसाद के साथ–साथ उन्होने मुझे अपनी जगह भी दे दी और आप लोगों की सेवा का मौका भी दिया। हुआ ये था कि उनका पेशाब बंद हो गया था, उनकी मूत्र नली में एक नली डाली गई थी ताकि उस नली के द्वारा पेशाब बाहर निकल आये। वहाँ जो सेवक था उसने मुझसे कहा– ये नली लगानी है, जब ये नली लगाते हैं तो बहुत तेज दर्द होता है, इसलिए आप महाराज जी को कसकर पकड लेना, उनको हिलने मत देना। शब्दानंद जी महाराज मेरे सामनें बैठे हैं और मैंने मानवदयाल जी महाराज को कसकर पकड लिया। सेवक ने नली लगाई, पता नही कैसे मानवदयाल जी ने अपना हाथ मुझसे छुडाया और जोर–2 से मेरे गाल पर 4 थप्पड लगाये, मैं हँस रहा हूँ, शब्दानंद महाराज देख रहें हैं, ये क्या हो रहा है और मैं खुश हो रहा था कि मुझे प्रसाद मिल रहा है और मुझे प्रसाद मिल गया जो मैं उनकी जगह पर बैठकर आप लोगो की सेवा कर रहा हूँ। सेवा क्या होती है? सेवा ये नही होती कि

जादू से तुम्हारे लिए साने की चैन बना दी, सोने की चैन बनाना एक जादूगर का काम है। गुरू का काम है तुमको ज्ञान देना। तुमको अज्ञान से निकाल कर प्रकाश में ले जाना।

तुसली दास कहते हैं– महा–मोह तम पुंज।

इसका मतलब है संसार अज्ञान के अंधकार का भंण्डार है और इस अज्ञान से निकालना सबसे बडा पुण्य है। इस संसार में सबसे बडा पुण्य है एक अज्ञानी को अज्ञान से निकालकर प्रकाश में ले जाना। क्योंकि इस संसार में सारे प्राणी दुखी हैं। जब गुरू अज्ञानी जीव को प्रकाश में ले जाता है तो वो सुखी हो जाता है। परमदयाल जी महाराज ने अपने आश्रम में बडे–2 अ़क्षरों में लिखा हुआ है– ऐ सत्संगियों गुरू किसी को कुछ नही देता, सबको अपने–अपने कर्म भुगतने पडते हैं, गुरू तुम्हारी सोच बदलता है और जब तुम्हारी सोच बदल जाती है तो तुम्हारे साथ चमत्कार हो जाता है। तुम एक नए आदमी बन जाते हो। जहाँ तुम दुखी थे वही तुम सुखी हो जाते हो। कैसे? मैं आपको एक मिसाल देता हूँ।

एक आदमी था रास्ते में चल रहा था। उसका एक्सीडेंट हो गया और उसकी टाँग टूट गई। उसको हॉस्पीटल ले जाया गया और उसकी टाँग पर पलस्तर करवाया और उसको घर ले आये। बीबी ने पूछा क्या हुआ? हे भागवान क्या बताऊँ, मेरा ऐक्सीडेंट हो गया, एक मोटर साईकिल बाले ने मेरी टाँग तोड दी। इस शहर में इतने लोग हैं, उसने मेरी टाँग ही क्यों तोडी? अब मैं 6 महीने के लिए बैड पर लेट गया। अब मैं कैसे कमाऊँ, कैसे बीबी–बच्चों को खिलाऊँ? उसके बच्चे आ गए, वो भी रोने लग गए, बीबी भी रोने लगी, मौहल्ले वाले आये, रिश्तेदार आये, ये सब रोने लगे। एक आदमी ने खुद को भी दुखी और सबकों दुखी कर दिया। अब दूसरा आदमी था वो सडक पर जा रहा था। उसका भी एक्सीडेंट हो गया और उसकी भी टाँग टूट गई, उसको भी हॉस्पीटल ले गये, पलस्तर करवाया और घर पर ले आये। उसकी बीबी ने पूछा– क्या हुआ? उसने कहा– कुछ नही हुआ, मालिक ने मुझे बचा लिया, सिर्फ टांग में थोडा सा फ्रैक्चर हुआ है, ये ठीक हो जाएगा और मैं फिर से कमाऊँगा और बच्चों को खिलाऊँगा। पर मालिक का शुक्र है मेरी जान बच गई सिर्फ टांग ही टूटी, मैं जिंदा हूँ आप सब के लिए, बच्चों के लिए। खुद भी खुश, बीबी भी खुश, बच्चे भी खुश और रिश्तेदार भी खुश। अब देखो दोनो आदमियों की एक जैसी स्थति है। एक आदमी ने खुद को दुखी, बीबी–बच्चों को दुखी और सारे मौहल्ले, रिश्तेदारों को दुखी कर दिया और दूसरे आदमी ने अपने को खुश, बीबी–बच्चों को खुश, रिश्तेदारों को खुश रखा। फिर सुख और दुख कहाँ हैं? सुख और दुख हमारी सोच में है। अब जो दूसरा आदमी था जिसने अपने को खुश, बच्चों को खुश और रिश्तेदारों को खुश रखा, उसका कारण क्या था? उसका कारण था, उसको गुरू मिला था और गुरू ने उसको ज्ञान दिया था। गुरू ने उससे कहा– बेटा ये हमारे प्रारब्ध कर्म हैं और प्रारब्ध कर्म भोगने ही पडते हैं। लेकिन तुमको गुरू मिले हैं, गुरू ने तुम्हारी सूली का काँटा कर दिया। तुम्हारी जान भी जा सकती थी, लेकिन तुम्हारी टाँग में थोडा सा फ्रैक्चर करके तुम्हारे कर्म कट गए। ये गुरू ने ज्ञान दिया, और इससे क्या हो गया? इससे उसकी सोच बदल गई और जब सोच बदल गई, तो उसको नीचे (पैर) से ऊपर (सिर) तक परिर्वतन हो गया।

मैं आपके अपना अनुभव बता रहा हूँ। मानवदयाल जी जाते–2 मुझको नामदान देकर गए। उन्होने मुझसे एक बात कही– शब्दानंद को मत छोडना। इसका एक राज था, वो मैं आपको बताता हूँ। मैं सिर्फ एक बात जानता था कि गुरू की सेवा कैसे करनी चाहिए और मैं तन मन धन से गुरू की सेवा करता था। मैंने तीन गुरूओं की सेवा की है। स्वामी जी मेरे घर में 15 साल रहे, मैंने उनकी सेवा की लेकिन मेरे पास ज्ञान नही था। ये बात मानवदयाल जी महाराज अच्छी तरह जानते थे, इस लडके के पास सेवा है, भक्ति है लेकिन ज्ञान नही है। इसलिए उन्होने मुझको नाम दान दे दिया कि शब्दानंद महाराज को कभी मत छोडना। फिर एक चमत्कार हुआ, मानवदयाल जी महाराज चोला छोड गए, दर्शी ने कोठी बेच दी, धाम अभी बना नही था। शब्दानंद जी महाराज कहाँ रहते?

मालिक ने ऐसा खेल खेला कि शब्दानंद महाराज मेरे घर में आ गए। हमारे घर में ऊपर एक कमरा था, उस कमरे में बैठकर वो किताब लिखते थे। एक दिन शाम को उन्होने खाना खाया और हमारे पास आकर बैठ गए और कहने लगे– देखो आप मेरी सेवा कर रहे हो, मुझे खाना खिलाते हो, मैं आपको क्या दे सकता हूँ? मैंने कहा– हम आपको पिता जी मानते हैं, आपको कुछ जरूरत नही है देने की, आप यहाँ आराम से रहिए। शब्दानंद महाराज बोले– मैं आपको सत्संग दूँगा। मैं खुश हो गया, अंधे को क्या चाहिए? दो आँख। महाराज जी बोले समय आप तय करो, सत्संग मैं दूंगा। मेरी बीबी शाम को जल्दी से घर का काम करती, बच्चों को Pack-Up करती, उनको सुलाती, फिर मैं, मेरी बीबी और शब्दानंद जी महाराज एक कमरे बैठे और सत्संग शुरू हो गया। ये सत्संग का सिलसिला कई महीनों चला और मैं उनके सत्संग टेप करता रहा। लेकिन उनके सत्संग टेप करना तो एक बहाना था, उनके सारे सत्संग मेरे यहाँ (मस्तिष्क) में रिकोर्ड हो गए। फिर मेरे साथ एक बहुत बडा चमत्कार हो गया, गुरू ने मुझे ज्ञान दे दिया और जब मुझे ज्ञान मिला तो मेरे अंदर एक परिर्वतन आ गया। शब्दानंद महाराज ने मुझे सत्संग दे–देकर अपने जैसा बना दिया और मेरे अंदर पैरों से लेकर सिर तक एक परिर्नतन आ गया और मैंने महसूस किया, मेरे बोलने का ढंग बदल गया, मेरे सोचने का ढंग बदल गया, मेरे देखने का ढंग बदल गया, मेरा व्यवहार बदल गया। जिनको मैं सोचता था ये मेरे दुश्मन हैं, वो मुझे दोस्त दिखने लगे। इतना जबरदस्त परिर्वतन आ गया मेरे अंदर। ये परिर्वतन क्या था? एक भृंगी ने एक कीडे को अपने जैसा भृंगी बना दिया। जो ये मैं आज आपको ज्ञान दे रहा हूँ, ये सारा ज्ञान शब्दानंद महाराज का है। जो ज्ञान मुझको अपने गुरू से मिला वही ज्ञान आपको बाँट रहा हूँ। अब आप ये मत समझना कि मैं आपको ज्ञान दे रहा हूँ तो आप पर एहसान कर रहा हूँ। मैं आप पर कोई एहसान नही कर रहा हूँ, बल्कि आप ही मुझ पर एहसान कर रहे हो, क्योंकि आप मेरा ज्ञान सुन रहे हो और उसे समझ रहे हो और उस पा चलने की कोशिश कर रहे हो। यही है सबसे बडा एहसान जो आप मुझ पर कर रहे हो। क्योंकि मुझ पर गुरू ऋण है और मैं अपना गुरू ऋण उतार रहा हूँ। कैसे? अज्ञानी जीवों को ज्ञान देकर ताकि आप भी मेरे जैसे बन जाएँ।

पारस और गुरू में यही अंतरो जान।
पारस तो लोहा कंचन करे, गुरू कर ले आप समान।।

गुरू कभी ये नही चाहता कि तुम्हारी जेब खाली करता रहूं और अपनी जेब भरता रहूँ।

गुरू नही भूखा तेरे धन का, उस पर धन है नाम रतन का।
पर तेरा उपकार करावें, भूखे–नंगे को दिलवावें।

मुझे आपसे किसी चीज का लालच नही है, सिर्फ एक चीज का लालच है, वो है–प्रेम। आप मुझसे प्रेम करो,

सब करनी मैं आप कराऊँ, पहुँचा दूँ धुर दरबारा।
तुमरी चिंता मैं मन राखी, तू अचिंत रह धरो प्यारा।।

मैं तुम सबको धुरपद धाम ले जाऊँगा, मेरा वादा है तुम सबसे, लेकिन एक शर्त है। तुम अपनी सारी चिंताएँ मुझे दे दो और तुम निश्चिंत रहो और मुझसे प्रेम करो। इतना सस्ता व्यापारी कहीं तुमको मिलेगा, जो ये कहता कि अपनी सारी चिंताएँ मुझे दे दो और मुझसे प्रेम करो। अगर दुनिया में इससे सस्ता सौदा कोई हो तो मैं गुलामी लिखवाऊँगा। लेकिन फिर भी दुनिया वाले कहते हैं– महाराज जी पहलें मेरे घर की सारी जिम्मेवारियाँ पूरी हो जाएँ, फिर मैं सत्संग में आऊगा, महाराज जी पहले मेरे बेटे–बेटियों की शादी हो जाए, फिर सत्संग में आऊँगा, कोई कहता है गुरू जी पहले मेरे बेटे की नौकरी लग जाए फिर सत्संग में आयेंगे। हम ये वादे करके जाते हैं गुरू जी से। ऐसा क्यों होता है? ये सब काल कराता है, जहा दयाल का सत्संग होता है, वहा सत्संगियों के बीच में काल आकर बैठ जाता है और सत्संगियों को गुमराह करता है कि ये कोई गुरू है, गुरू तो

वहाँ है क्या सफेद दाडी है, रेशमी वस्त्र हैं, लाखो की भीड है, मातियों की माला है और इस तरह दयाल के वचनों पर विश्वास नही करने देता। क्योंकि जो भी सच्चे गुरू के सत्संग में आया, उसके वचनों पर विश्वास किया, उसकी मुक्ति, गारन्टी के साथ मुक्ति। गुरू आता ही इसलिए है, जीवों को बंधन से मुक्त करने के लिए। सत्संग में गुरू की रेडिएशन हमेशा निकलती रहती है। आपको पता नही है, ये छोटा बच्चा है इस पर भी रेडिएशन जा रही है, इसके अंदर बीज चला गया और समय आने पर फूट जाएगा। आप ये मत समझना ये बच्चा ऐसे ही इस दरबार में आ गया, कोई ऐसे ही इस दरबार में नही आ सकता, जिसके भाग्य में होगा वही इस दरबार में आ सकता है। इस गांव में हजारों बच्चे हैं, कोई यहाँ आया है? तो दयाल के दरबार में कोई भाग्यशाली ही आ सकता है। काल हमेशा जीव को रोकता है वो दयाल के दरबार में आने नही देता। क्योंकि इस संसार का जेलर काल है। आप लोग अपने आप को कम मत समझो, आप सब उसी मालिक के अंश हो, जिस मालिक का अंश मैं हूँ। हम सब उसी मालिक के अंश हैं। आप में और मुझ में कोई अंतर नही है। सिर्फ एक बात का अंतर है गुरू सुलझा हुआ है और चेला उलझा हुआ है। गुरू के पास ज्ञान है और चेले के पास ज्ञान नही है। अगर गुरू अपना सारा ज्ञान चेले को दे देता है तो फिर चेले और गुरू का फर्क मिट गया, और चेला भी गुरू बन सकता है। आज सत्संग समाप्त करने से पहले मैं आपको वही बात बताऊँगा जो हमेशा बताता हूँ। आप सत्संग में आये हो, गुरू ये शरीर नही है, गुरू है वाणी। गुरू के मुख से जो शब्द निकले वही गुरू है। परमदयाल जी महाराज, मानव दयाल जी, शब्दानंद जी तो अब नही रहे लेकिन उन्होने जो ज्ञान दिया, जो शिक्षा दी वो हमेशा हमारे साथ रहेगी। इसलिए गुरू क्या है? गुरू है ज्ञान। आज जो भी बात कही, उसको ध्यान से सुनो, उसका मनन करो और उसको ग्रहण करो। आपके साथ चमत्कार होने लगेगे, जब आप गुरू की बात को सुनकर उस पर चलने लगोगे तो आपके साथ चमत्कार होने लग जाएंगे और सबसे बडा चमत्कार ये हो जाएगा कि आप गुरू बन जाओगे। गुरू कर ले आप समान ।।

!! राधा स्वामी !!